बिहारी के दोहे

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

1. **छाया भी कब ढूँढने लगती है?**

उत्तरः– जेठ के महीने में जब बहुत अधिक गर्मी पढती है, तब दोपहर के समय सूर्य आकाश में बीचों बीच चमकता है। छाया ऐसे दिनों में या तो घर के अंदर दिखाई देती है या घने वनों में होती है। यह देखकर कवि कहता है, कि मुझे लगता है, छाया भी छाया को ढूँढने चली गई है।

2. **बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है 'कहि है सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात' स्पष्ट कीजिएः–**

उत्तरः– विहारी ने अपने दोहे में जिस नायिका का वर्णन किया है, वह पढी–लिखी नही है, उसका प्रियतम परदेश में रहता है, किंतु वह अनपढ होने के कारण अपने प्रियतम को पत्र द्वारा संदेश लिखकर नहीं भेज सकती है, तब वह संदेश वाहक से कहती है कि तुम मेरे प्रियतम के पास जाकर केवल इतना कह देना कि वे अपने ह्दय से मेरे ह्दय का हाल जान ले, ऐसा संभव है क्योंकि जिसे हम दिल से प्यार करते है, उसके दिल की बात भी आसानी से समझ सकते है, रामायण में लिखी हुई यह चौपाई इस बात को स्पष्ट करती है।

'पिय हिय की सिय जानन हारी।

मणि मुद्रिका तुरंत उतारी।।'

3. **सच्चे मन में राम बसते हैं– दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।**

उत्तरः– बिहारी कवि कहते है, माला जपने से तिलक लगाने से या गेरूए रंग के कपडे पहनने से किसी को भी ईश्वर की प्राप्ती नहीं होती जब तक मन संसार के सुखों में भटकता

रहेगा, तब तक ईश्वर की प्राप्ती होना असंभव हैं जन मन संसार के सुखों को छोडकर सच्चे भाव से ईश्वर में लग जाएगा। तो ईश्वर आसानी से मिल जाएँगे ईश्वर को पाने के लिए किसी तरह का आडम्बर करने की आवश्यकता नहीं है।

4. **गोपियॉ श्रीकृष्ण की बॉसुरी क्यों छिपा लेती है?**

उत्तरः– गोपियॉ श्रीकृष्ण से बात करने के लालच में उनकी बॉसुरी छिपा देती हैं गोपियों का ऐसा मानना है कि श्रीकृष्ण जब तक बॉसुरी बजाते है तब त कवे किसी से बात नहीं करते इसी कारण गोपियॉ बॉसुरी को अपने और श्रीकृष्ण के मध्य बाधक मानती है और उसे छिपा देती है। दूसरे गोपियों को विश्वास है कि बॉसुरी न मिलने पर श्रीकृष्ण उसको ढूँढते हुए हमारे पास अवश्य आएँगें तब हम उन्हें अपने बातों में उलझा लेगें।

5. बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरः– बिहारी कवि का कहना है कि कभी–कभी ऐसी परिस्थिति भी आती है जब हम सबके सामने बोलकर या इशारों के द्वारा अपनी बात दूसरे से नहीं कह सकते है। तब हम ऑखों के माध्यम से अपनी बात कह सकते है जैसा कि दोहे में बताया है कि सभी की उपस्थिति में नायक नायिका से अपनी बात नहीं कह सकता तो वह ऑखों के माध्ययम से अपनी बात कहता है और नायिका भी उसी प्रकार ऑखों के द्वारा उसकी बात का जवाब देती है।